2021-2022

स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी-मराठी कविता

संपादक :

प्रो. डॉ. रणजीत जाधव

सह संपादक :

प्रा. डॉ. दिलीप गुंजरगे, प्रा. राजेश विभुते

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान —डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे 119

स्वाधीनता आंदोलन के कवि नाथूराम शर्मा शंकर —डॉ. मुरलीधार अच्युतराव लहाडे 124

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान —डॉ. संजीव कुमार नरवाडे 129

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में राष्ट्रीय चेतना – प्रा. बालाजी सूर्यवंशी 135

27. माखनलाल चतुर्वेदी की कविताओं में राष्ट्रीय भाव संवेदना —डॉ. सुभाष राठोड 141

28. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता – डॉ. बलवंत बी.एस. 148

29. आधुनिक हिंदी कविता में राष्ट्रीय भावना – प्रा. संतोष शिवराज पवार 151

30. स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी कविता का योगदान – प्रा. सूर्यकांत रामचंद्र चव्हाण 156

31. स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता —डॉ. वनिता कुलकर्णी 161

32. आधुनिक चेतना के विकास में स्वच्छंदतावादी कविता का योगदान —प्रा. डॉ. कदम एस.एस. 167

33. स्वाधीनता आंदोलन में ग़ज़लकार कैफ़ी आजमी का योगदान (सरमाया के संदर्भ) —डॉ. जहीरुद्दीन र. पठान 171

34. स्वाधीनता आंदोलन में माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य की भूमिका – प्रा. डॉ. पी. एम. भुमरे 175

35. मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना – डॉ. वडचकर शिवाजी 182

36. स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी कविता – डॉ. बालाजी भुरे 188

37. स्वाधीनता आंदोलन के सजग शिपाही माखनलाल चतुर्वेदी —डॉ. मुकुंद कवडे 196

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

...pudkar (ACS) Colle... Dist: Parbhani ... Gangakhed Tal...

मैथिलीशरण गुप्त की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना

प्रा. डॉ. वडचकर शिवाजी

स्वतंत्रता संग्राम के संदर्भ में देष की जनता के मन में राष्ट्रीय चेतना को जगाने ...ए कई तरह के प्रयोग किए जा रहा थे। उनमे साहित्य की भूमिका महत्वपुर्ण है। साहित्य मानवता को उजागर करता है। साहित्य के द्वारा मनुष्य अपने समाज और सह-मनुष्य को समझने की कोषिष करता है। साहित्य संस्कृती का संवाहक है। साहित्य के प्रत्येक शब्दों में भावोद्रेक की अप्रतिम शक्ति होती है। यह व्यक्ति को वास्तविक स्थिति से परिचित कर के उन उदात्त विश्वासों से जोड़ता है जो उसे महामानव बनाते है। सामाजिक धरातल पर मानव का यह उदात्त की ओर आरोहण है। व्यक्तिगत धरातलपर जीवन प्रवृत्तियों का उन्नयन भी साहित्य ही करता है। भारतीय राष्ट्रीय चेतना और एकता के स्पष्ट दर्षन इस देश की विभिनन भाषाओं के साहित्य में होते है।

पराधीनता की पीडा एवं घुटन का अनुभव उसी समाज को होता है, जिसे गुलामी की जंजीरों से जकडा गया हो। मुगलों के आक्रमण के परिणाम स्वरुप मध्यकालीन साहित्य में भक्ति भावना की अभिव्यक्ति तीव्र हुई। तत्पश्चात अंग्रेजी सरकार से पद-दलित और दबे-कुचले संपुर्ण भारतीय समाज के बीच राष्ट्रीय चेतना का स्वर प्रबल होकर गुँजने लगा। इस दिश में यह बात उल्लेखनीय है कि इस काल की राष्ट्रीय चेतना में सामाजिक सुधार एवं नवजागरण की परिकल्पना महत्वपुर्ण साबित हुई है। रामस्वरुप चतुर्वेदी इसीबात की पुष्टि में लिखते है। "क्रमशः ऐहिकता की ओर उन्मुख समाज में राष्ट्र भावना जैसे भक्ति भावना की स्थानापन्न बन गई हो, विविध वर्गों की एकता और समानता जिसका घोषित लक्ष्य था।" हमारे देशवासियों के सामने आई इस विपदाने जन-मानस काँ उठा था एक ओर भारतीय प्रजा विदेशी आक्रांताओं के क्रुर पाष में थी तो दूसरी ओर अपने ही देशवासियों के कुकर्मों से व्यथित थी। तत्कालीन स्वतंत्रता सेनानियों के कंधोंपर सामाजिक सुधार का भार भी पड गया, क्योंकि उनकी मान्यता थी कि समाज की रुढियों, पांखडों एवं कुप्रथाओं से मुक्त न होने पर विदेषियों से आजाद होकर भी हम स्वाधीन नही हो सकेंगे। अस्पृष्यता, बालविवाह, सतीप्रथा, विदेषी वस्तुओं के प्रति मोह एवं मानसिक तौर पर अँग्रेजों की गुलामी आदि कई तरह से समाज दिग्भ्रमित था। इस तरह के समाज को सही रास्ता दिखाने का काम तत्काललीन समाज - सुधारकों ने किया। इस महत्वपुर्ण कार्य में एक ओर समाज - सुधारक पुर्ण रुप से क्रियाशील थे तो दूसरी और साहित्य एवं कला - रुपों से जुडा देषभक्त संपन्न वर्ग भी

निष्ठा के साथ काम करने लगा। राष्ट्र भर में इस तरह कई साहित्यकार अपनी राष्ट्रीय चेतना से युक्त रचनाओं के द्वारा सामाजिक सुधार एवं राजनैतिक दासता से मुक्ति का संदेष अपनी - अपनी भाषा में देने लगे। इस कोटि में मैथिलीशरण गुप्त का नाम विशेष रुप से उल्लेखनीय है।

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

स्वतंत्रता संग्राम और तत्कालीन भारतीय साहित्य-

भारतीय इतिहास में अंग्रेजों का शासन काल और परिणाम स्वरुप स्वतंत्रता संग्राम की बात महत्वपुर्ण है। भारतीय जनता के विकास को रोकने के लिए अंग्रेजों ने यहाँ के उद्योगधंदों और व्यापार को नष्ट करने के साथ-साथ भाषाओं में प्रमुख स्थान अंग्रेजी को दिया। यहाँ उन्होंने एक काम किया जो है भाषा को टुकडों - टुकडों में बाँट दिया। डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार "गाँधीजी ने अँग्रेजी की जगह भारतीय भाषाओं के व्यवहार को राष्ट्रीय आंदोलन का अभिन्न अंग बना दिया।" राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति के प्रयत्नों के साथ जोडा जाता है। विदेशी शासक के नाते वे इस देश की उन्नती या भलाई की ओर ध्यान न देते हुए अपने देश हित तथा स्वार्थवष यहाँ की मानव शक्ति एवं धन को लुटते रहे। वे हर जगह ' तोडो और शासन करो ' वाली निति अपना रहे थे। अपनी शिक्षा पद्धति के माध्यम से वे धीरे-धीरे इस देश में अपनी जड़ों को मजबुत कर रहे थे। ठाकुर प्रसाद सिंह ने अंग्रेजों की तुलना मुगलों से की है "उसकी तुलना में उनके पुर्व इस देश में आक्रमणकार के रुप में आए मुसलमान कहीं अधिक देसी थे क्योंकि वे यही के होकर रह गए थे।" स्वाधिनता संग्राम के साथ ही देष में नवजागरण का स्वर गुंजने लगा था। इसमें असंख्य किसानों और भूमिहीनों ने भाग लिया। अहिंसा और सत्याग्रह के बल पर भारत वासी अपनी एकता का प्रदर्षन करने लगे। भारत के आर्थिक विकास की दिशा की ओर संकेत करते हुए प्रो विपिनचंद्र का अभिमत है, कि "भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन ने शुरु से ही और लगभग पुरे मतैक्य के साथ आधुनिक उद्योंगों और कृषि विकास के आधार पर समाज के पूर्ण आर्थिक रुपांतरण का लक्ष्य स्वीकार किया।"

स्वाधिनता संग्राम के संदर्भ में देश की जनता के मन में राष्ट्रीय चेतना को जगाने के लिए कई तरह के प्रयास किए गए। उनमे महत्वपुर्ण हिंन्दी काव्य की भुमिका रही है। हिन्दी में राष्ट्रीय कविता की शुरुआत भारतेंदुयुग से मानी जाती है। इस युग के कवियों की एक विषेषता हास्य व्यंग्य रही है। द्विवेदी युग को सामाजिक - राष्ट्रीय काव्य धारा के रुप में माना जाता है। बढ़ती हुई राजनैतिक चेतना तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के परिणाम स्वरुप राष्ट्रीयता द्विवेदी युग की मुख्य भावधारा थी। इस वक्त कविताओं का मुख्य स्वर राष्ट्रीयता ही रहा है। इस काल के कवियों ने राष्ट्रीय चेतना से युक्त कविताएँ लिखी। देशभक्तिपूर्ण कविता का प्रणयन किया। कवियों ने पराधीनता को सबसे बड़ा

अभिशाप माना तथा स्वाधिनता-प्राप्ति के लिए क्रांति एवं आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा दी। नाथुराम शंकर शर्मा ने बलिदान गान में कहां था कि मरने से डरे बिना प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।

Late Ramrao Pudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

मैथिलीषरण गुप्त के काव्यों मे राष्ट्रीय चेतना-

हिन्दी साहित्य जगत में द्विदीयुगीन कवि मैथिलीशरण गुप्तजी का स्थान अद्वित्तीय माना जाता है। कथाओं में पौराणिक चुनाव, गृहस्थ जीवन की महीमा का आख्यान, व्यापक हिन्दु नैतिक मुल्यों का समर्थन और राष्ट्रीय भाव-धारा की अभिव्यक्ति सीधी-सरल भाषा के कारण इनकी रचनाओं को अधिक लोकप्रियता दिलाती है। गुप्तजी ने ना अंग्रेज आधिपत्य ना संस्कृत के आभिजात्य को भी अपनी रचनाओं में स्थान नहीं दिया। इनके काव्य में आम जनता की बोलचाल की भाषा को स्थान मिला है। तत्कालीन जनता की पराधीनता की घुटन, लोगों की कठिनाइयों, समाज में नैतिक मुल्यों की स्थापना की कामना आदि के साथ संवेदनात्मक स्तर जुडा है। उन्होने राष्ट्रभर की आवष्यकताओं को ध्यान में रखकर लेखन किया है, वे गांधीजे के मार्गपर चलकर देश के लिए सभी तरह के त्याग को स्वीकार करके चलनेवाले कवि थे। इन्ही बातों से आकृष्ठ होकर गांधीजी ने उन्हे राष्ट्रकवि के रुप में उद्घोशित किया था। गुप्तजी के काव्य में उनके पिता की संस्कारशिलता झलकती है। वे स्वभाव से ही नम्रतापुर्ण भक्ति संपन्न तथा संवेदनशील कवि थे। उनकी रचनाओं में देश, समाज एवं साहित्य के विभिन्न पहलुओं को स्थान मिला है। इनकी रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना के स्वर के संबंध में डॉ. नगेंद्र कहते है "महात्मा गाँधी के भारतीय राजनीतिक जीवन में आने से पुर्व की रचनाओं, जयद्रथ-वध और और 'भारत-भारती' में कवि अहिंसा और शांति का नही बल्कि क्रांति का उद्गायक रहा है। बाद में गाँधी, राजेंद्रबाबू, स्वर्गीय जमनालाल बजाज, नेहरु जी विनोबा भावे के संपर्क के कारण वह गाँधीवाद के व्यावहारिक पक्ष, सुधारवादी आंदोलनों आदि का समर्थ प्रवक्ता बना।" गुप्तजी कलम और कर्म के स्वतंत्रता सेनानी थे। उनमें जातीय गौरव का सकारात्मक अभिमान था। उन्होने किसी भी धर्म को दूसरे धर्म से श्रेष्ठ या निकृष्ठ नही माना।

गुप्तजी को अधिकाधिक रुप से प्रबंध काव्य 'भारत-भारती' से ख्याति मिली है। नवजागरण की अभिव्यक्ति 'भारत-भारती' के अलावा अन्य किसी रचना में नहीं मिलती। राष्ट्र की आकांक्षा को चित्रित करनेवाले इस काव्य में कवि ने विषय-वस्तु, काव्य-कौशल्य प्रांजल भाषा और गेयता का सम्यक समायोजन करते हुए उत्कृष्ठ बनाया है। उनके अन्य कृतियों में 'साकेत' के अलावा, जयद्रथ वध, शकुंतला, पंचवटी, यशोधरा और विष्णुप्रिया उल्लेखनीय है। स्वदेश - संगीत, झंकार और मंगल-घाट उनके

मुक्तक एवं प्रगीतों को गुंफित कर प्रबंध रुप देने का प्रयास है। स्वदेश संगीत में उन्होंने मातृ-भूमि की महिमा का बखान किया है -

"जय जय भारत - भूमि-भवानी
अमरों ने भी तेरी महिमा बखानीए"

अनध काव्य के अंतर्गत भगवान बुध्द की करुणा को कवि ने साकार करते हुए जन सेवा की उत्कृष्टता की ओर बल दिया है।

"न जन सेवा, न मन सेवा,
न जीवन और घन सेवा,
मुझे है इष्ट जन सेवा,
सदा सच्ची भुवन सेवा।"

स्वदेश की महिमा गुप्तजी ने अपनी रचनाओं के अनेक प्रसंगों में गाई है। 'गुरुकुल' में गुरु गोविन्द सिंह के मुखसे देश के गौरव का गान इस तरह से किया है -

"जिसके तीन ओर अर्णव है,
चौथी ओर हिमाचल पीन
ऐसा देष दुर्ग पाकर भी
रह न सके हा। हम स्वाधीन।"

'हिमाद्रि तुंगश्रृंग' से कविता में प्राचीन काल के कथानकों में भी गुप्तजी ने स्वदेष प्रेम और राष्ट्रीय भावना को इस कौषल से अभिव्यक्त किया है कि वह उन प्रसंगो में अपनी सार्थकता रखते हुए आज के युग की भावनाओं को भी वाणी देने में समर्थ है। विदेषी शक्ति से देष की स्वाधिनता की रक्षा के लिए ' साकेत' के रामकृत संकल्प है -

"पुण्य भूमि पर पाप कभी हम सहन सकेंगे
पीड़क पापी यहाँ और अब रह न सकेंगे।"

गुप्तजी राष्ट्रीय आंदोलन में विभिन्न धर्मो और सम्प्रदायों की एकता के महत्व को अनुभव करते थे। इसी उद्वेष्य से उन्होनें 'काबा और कर्बाला' तथा 'गुरुकुल' दो काव्य संग्रहों की रचना द्वारा इस्लाम धर्म और सिक्ख धर्म के प्रति श्रध्दा व्यक्त की है। "मातृ-मंदिर" नामक कविता में सभी धर्म, जाति, संप्रदाय की एकता का प्रतिपादन करते हुए वे कहते है - 'जाति-धर्म या संप्रदाय का, नही भेद व्यवधान यहाँ एक ने सब के लिए भेजे यहाँ निज ग्रंथ है। राष्ट्रीयता और विष्वप्रेम में धर्म बाधक नहीं है बल्कि धर्म या संम्प्रदाय का, नही भेद व्यवधान यहाँ। राष्ट्रीयता और विष्वप्रेम में धर्म बाधक न्ही है बल्कि धर्म का उद्वेष्य विश्व-बन्धुत्व भावना बढाने का होना चाहिए।

"किन्तु हमारा लक्ष्य, एक अम्वर, भु-सागर,
एक नगर-सा बने विश्व, हम उसके नगर।"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

भारतीय स्वाधिनता आंदोलन का एक और प्रमुख लक्ष्य था, सामाजिक समानता अर्थात सभी समाज के सभी वर्ग के लोगों के साथ समानता का व्यवहार अछुत, हरिजन, एवं पिछडी जातियों के लोगों का उत्थान स्वतंत्रता आंदोलन के कर्णधार गांधीजी ने यह जान लिया था कि जब तक सभी वर्ण के लोगों को सामाजिक समता प्राप्त न हो, तब तक देष की राजनीतिक स्वतंत्रता कठीन ही नही व्यर्थ है। इसीलिए स्वतंत्रता संग्राम के रचनात्मक कार्यक्रमों में हरिजनोध्दार को महत्वपुर्ण स्थान दिया और इसके लिएं व्यापक कार्यक्रम तैयार किए। गुप्तजीने अपनी रचनाओं में बार-बार "जन्मना जाति सिध्दांत " का अर्थात जन्म के आधार पर जाति निश्चित होने का विरोध किया है। वे कर्म और आचरण को व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा का आधार मानते है। 'अनघ' काव्य में मघ को अघूतोध्दार के प्रयासों की ग्रामवासी आलोचना करते है, तब उन्हे मघ द्वारा यह उत्तर दिया जाता है।

"इसका भी निर्णय हो जाए, नही अछुत मनुज क्या हाया,
क्रे अशचिता सबकी दूर, उनसे घृणा करे सो क्रूर।
जिनके बल पर खडा समाज, रहती है सुचिता की लाज
उनका ऋण न करता खेद। है अपना ही मुलाच्छेद।"

जयद्रथवध गाँधीवादी चिंतन का जीवंत उदाहरण है। उनका लेखन शाब्दिक जुगाली न होकर, युगधर्म एवं राष्ट्रधर्म को सार्थक बौध्दिकता से शब्दायित करनेवाला है। वे आशावादी एवं आस्थावादी कवि थे। देश की दुर्दशा से प्रभावित होकर भी निराशा नहीं थे। उन्होने भविष्य का स्वर्णिम स्वप्न ही सर्वत्र चित्रित किया है। उन्होने समाज के नैराष्य को खुले शब्दों में ललकारा है।

"जिसको न निज गौरव तथा निज देष का अभिमान है।
वह नर नहीं, पर पशु निरा है और मृतक समान है।"

राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता ने इस अंतर्ध्वनित सत्य को व्यक्त किया है कि संस्कृतियाँ-सभ्यताएँ, मुल्य - मर्यादाएँ सिर्फ प्रतीकों और आदर्शों के सहारे नहीं चलती। उनके निर्माण में देष की आंतरिक लय और नई पीढ़ी के प्रबुध्द मानस की भूमिका महत्वपुर्ण होती है। धरतीमाता की कोखसे नए प्रतीक, नए नायक पैदा होते हैं और इतिहास, पुराण, स्मृति की परंपाराएँ अँगडाई लेकर जाग पड़ती है। अछुतों के मंदिर - प्रवेष के प्रष्न को ध्यान में रखते हुए गुप्तजी ने इसे कुछ बदले हुए रुप में 'सिध्दराज' में उठाया है। सिध्दराज की माता को यह जानकर अत्यंत खेद होता है कि मंदिर प्रवेश सबके लिए उपलब्ध नहीं है। वह बिना दर्शन किए ही लौट आती है और मंत्री के पुछने पर स्पष्ट कह देती है -

"मंदिर का द्वार जो खुलेगा सबके लिए

Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

होगी तभी मेरी वहाँ विश्वंभर भावना।"

गुप्तजी आशावादी एवं आस्थावादी कवि थे। वे हमारे देश में रामराज्य की कामना करते है। इसी इच्छा की घोषणा करते हुए वे साकेत में लिखते है कि -

"मै आर्यो का आदर्श बताने आया
मै जनसम्मुख धन को तुच्छ बताने आया...
भय में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहाँ मै नहीं स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।"

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth
Dist. Parbhani

सारांश:- गुप्तजी के कृतित्व का सबसे बडा मुल्य है, स्वाधीनता स्वाधीन राष्ट्र, और स्वाधीन चिंतन। इसी मुल्य के आकर्षण से विद्रोही कवि अज्ञेय को उनका मानस शिष्य बनने पर विवक्ष किया था। गुप्तजी ने अपने काव्यों के वस्तु-पक्ष एवं भाव-पक्ष में राष्ट्रीयता के साथ सांस्कृतिक कर्म को जोड़ा है। उनका साहित्य भारतीय संस्कृति से अनुप्रणित होता है। इनकी राष्ट्रीय एकता का स्पष्ट दर्षन राजनैतिक धारा में न होकर इसी सांस्कृतिक धारा में होता है।

संदर्भ :-

01. रामविलास शर्मा, स्वाधीनता संग्राम-बदलते परिदृष्य-पृ.168
02. रामविलास शर्मा, स्वाधीनता संग्राम-बदलते परिदृष्य-पृ.168
03. ठाकुर प्रसादसिंह, स्वतंत्रता आंदोलन और बनास पृ-117
04. प्रो. विपिनचंद्र - भारत का स्वतंत्रता आंदोलन और बनारस पृ-415
05. डॉ. नगेद्र - मैथिलीषरण गुप्त काव्यसंदर्भ पृ-6
06. मैथिलीषरण गुप्त - मैथिलीषरण संचयिता पृ-226
07. डॉ. नगेंद्र - मैथिलीषरण गुप्त काव्यसंदर्भ कोष पृ-143
08. गुरुकुल पृ-220
09. सांकेत
10. राजा-प्रजा
11. अनघ पृ-46
12. डॉ. नगेंद्र - मैथिलीषरण गुप्त पृ-109

हिन्दी विभाग, कै. रमेष वडपुडकर महा. सोनपेठ
जिला. परभणी महाराष्ट्र 431516
Mob.: 8983848788

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

डॉ. रणजीत जाधव

जन्म : जून 1971, चिलखा, तहसिल : अहमदपूर जि.लातूर (महाराष्ट्र)

शिक्षा : एम.ए.हिन्दी (1994) पी.एच.डी. (2003)

लेखन : 1) हिन्दी साहित्य तथा भाषा को महाराष्ट्र की देन, 2) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक, 3) हिंदी साहित्य विमर्श, 4) दक्षिण भारतीय संत परम्परा, 5) संत तुकाराम की हिंदी पदावली, 6) हिंदी भाषा विविध आयाम 7) भाषा, साहित्य और संस्कृति चिंतन

सम्पादन : 1) भाषा तथा भाषा विज्ञान के अद्यतन आयाम, 2) संत साहित्य और वर्तमान जीवन, 3) हिंदी मराठी संत साहित्य मैं प्रगतिशील चेतना, 4) 'भारतीय भाषा और साहित्य चिंतन', 5) डॉ.सूर्यनारायण रणसुभे रचनावली, 6)हाशिए का समाज और हिंदी मराठी साहित्य, 7) विलासदीप विशेषांक, 8) हिंदी साहित्य मैं संवैधानिक मूल्य, 9) स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी मराठी कविता, 10) स्वाधीनता आंदोलन और भारतीय साहित्य

शोध–निर्देशक : स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय,नांदेड की ओर से 6 शोध छात्रों को पी.एच.डी. घोषित

विशेष : 1) अध्यक्ष, संत कबीर प्रतिष्ठान,लातूर, 2) कार्यकारणी सदस्य, हिन्दी साहित्य परिषद,लातूर, 3) राज्य, राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में आलेख वाचन तथा अतिथि के रुप में निमंत्रित, 4) हिन्दी की स्तरीय पत्र–पत्रिकाओं में 60 लेख प्रकाशित, 5) आकाशवाणी परभणी केन्द्र से कार्यक्रमों का प्रसारण, 6) संयोजक : कबीर प्रतिष्ठान, लातूर द्वारा आयोजित पांच संगोष्ठियाँ तथा प्रतिवर्ष 'कबीर व्याख्यानमाला' का आयोजन

पुरस्कार/सम्मान : 1) महाराष्ट्र राज्य हिन्दी साहित्य अकादमी,मुंबई का 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी पुरस्कार 2017', 2) हिन्दी समर्पण सम्मान – 2015 (साहित्यकार संसद,इलाहाबाद) 3) 'साहित्य भूषण पुरस्कार–2011' (धर्मवीर बहुउदेशिय सेवाभावी संस्था, लातूर)

संप्रति : प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, स्व.व्यंकटराव देशमुख महाविद्यालय, बाभलगाँव ता.जि.लातूर (महाराष्ट्र)

संपर्क : 'शब्दांकुर', यमुना सोसायटी, पुराना औसा रोड, लातूर–413531 (महाराष्ट्र)

मो॰ : 9421374116 **ई–मेल :** jadhavranjit500@gmail.com

शैलजा प्रकाशन

57–पी, कुंज विहार–II, यशोदा नगर, कानपुर

Mob.: 9451022125 • E-mail: shailjaprakashan@gmail.com

ISBN : 978-93-80760-97-1

9789380760971

₹725/-

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

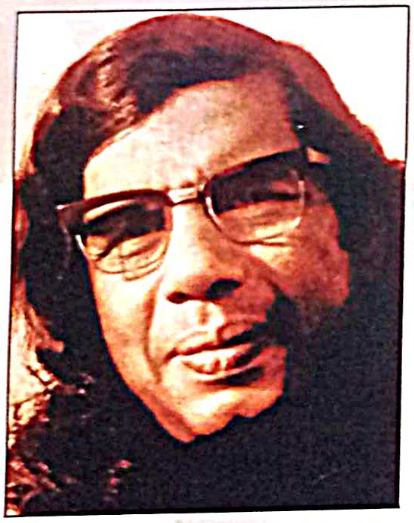

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य
संदर्भ और प्रकृति

संपादक मंडल
डॉ. सतीश यादव
डॉ. संतोष कुलकर्णी
डॉ. रणजीत जाधव
डॉ. हणमंत पवार

यश पब्लिकेशंस
नई दिल्ली, भारत

73. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में नारी के विविध रूप 418
डॉ. अशोक अंभोरे

74. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य की भाषा शैली 422
डॉ. गंगाधर वानोडे

75. रेणु और नागार्जुन : अंतःसंबंध 429
डॉ. बळीराम संभाजी भुक्तरे

76. आँचलिक उपन्यासकार रेणु और नागार्जुन : अंतःसंबंध 435
डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे

77. फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में ग्रामीण एवं सामाजिक चेतना 443
प्रा. डॉ. वडचकर एस.ए.

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth • Dist. Parbhani

Warpudkar (ACS) C

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में ग्रामीण एवं सामाजिक चेतना

प्रा. डॉ. वडचकर एस.ए.

फणीश्वरनाथ रेणु की प्रसिद्धि ग्रामकथा-लेखन और यर्थाथवाद से है। फणीश्वरनाथ रेणु को विशेषतः "मैला आँचल और 'परती परिकथा' के रुप में देखा जाता है। रेणुजी ने लगभग 60 से अधिक कहानियों की रचना की है। रेणु की पहली औपन्यासिक कृति 'मैला आँचल' का प्रकाशन हुआ तब उसे गोदान के बाद महाकाव्यात्मक उपन्यास माना गया। रेणु का मनिषी अंतकरण शैक्षणिक प्रगति से गाँव की सामुहिक प्रगति का सपना देखता है। जातीयता का टूटन चाहत बहुत कुछ बदलाव आता भी है। गाँव केनवयुवक और स्त्रियाँ जितेंन्द्र की हवेली में आने लगती है। नवयुवक सुवंश-मलारी के प्रेम संबंधां कोलेकर उठे वितंडतावाद में उसका साथ देते है। शिक्षा औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण गाँव कौन सी मानसिकता प्रदान करते हैं। अंधविश्वासों से संस्कार अब हिलने लगे है। 'रेणु' को ग्राम जीवन का समग्र बोध है। उन्हें उनके यथार्थ की गहरी परख और पहचान है जिससे वे लोक तत्वों की समाहिति से और भीगहरा चिंति करते है। आँचलिक उपन्यासकार रेणुजीने गॉवों की मिट्टीसे जोडने का प्रामाणिक प्रयास किया है।

वर्तमान परिवेश में अँचलों में अनेक परिवर्तन होने के बावजूद भारतीय संस्कृति की सच्ची तस्वीर छुपी हुई है। इनके उपन्यासो में प्राकृतिक परिवेश एवं संस्कृति को अधिक महत्व दिया है। रेणु के उपन्यास काप्राणतत्व लोकसंस्कृति है। इन्होने आँखो-देखी प्रामाणिकता से स्पष्ट की है। आँचलिक उपन्यास में जिनविषयों को वर्णित किया जाता है वे सभी रेणु के उपन्यासें में चित्रित हुआ

Late Ramesh ... (ACS) College, Sonpeth, Dist. Parbhani

है। रेणु ने उसक्षेत्र में प्रचलितरस्म-रिवाज, आचार-विचार, रहन-सहन, त्यौहार, विवाह, खान-पान, भाषा शैली, परंपरा, गरीबी, सांस्कृतिक छटा लोक संस्कृति का चित्रण अपने साहित्य में किया है। जिससे पाठक वर्ग उस ऑचल की सांस्कृतिक परिदृश्य से परिचित हो जाते।

आज 'कम्प्यूटर' के युग में लोकजीवन पर धर्म की पकड मजबुत है। धर्म की यह पकडदो रुपों में दृष्टव्य है। एक ओर बाहयाचार और पाखंड आदि से धर्म का स्वरुप है, जो मुख्यतः अभिजात वर्गऔर बुर्जुआ वर्ग की तथाकथित संस्कृति का अंग है तो दूसरी ओर धर्म का वह स्वरुप है, जो जन-साधारण के 'अन्युदय' और 'निःश्रेयस' में अपनी भूमिका निभाता रहा है। 'मैला आँचल' में मठ और उससे संबंध अनैतिकता का वर्णन विस्तार से हुआ है और यह सादृश्य है। रेणु यहाँ पर दिखाना चाहते हैकि सदाचार, ईश्वरोपासना और परोपकार आदि के केंद्र माने जाने वाले गाव का वास्तविक रुप क्या है? नए महंत दवाराराम पियारी को सार्वजनिक रुप में रखैल के रुप में मान्यता देना पतन की चरम सीमा है। भारतीय संस्कृति में एक ओर विचार मुद्रा, सहिष्णुता और सदभाव को महत्व दिया जाता है तो दूसरी ओर 'कटटरता' या 'घृणा' को अस्वीकार किया जाता है। प्रेमचन्द की परम्परा को आगे बढाने का श्रेय उपन्यास और कहानियों में रेणुजी को है। रेणु अंचल विशेष की सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विशेषताओं को अदभुत भाषा कौशल्य के साथ उजागर करते है। अनेके चरिीं की छटा भी निराली है। रेणु की कहानियों में जिस भाषा का प्रयोग हुआ है, वह जहॉ कहीं आँचलिक है वहाँ अदभुत अपूर्व हो गयी है।

रेणु की पहली औपन्यासिक कृति 'मैला आँचल' का प्रकाशन अगस्त 1954, में हुआ उनकी रचनाओं में मानवीय आस्था, राजनीतिक विश्वास की पहचान भी हमें मिलती है। स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय ग्राम निवासी नगरों मे आने वाली जागरुकता एवं परिवर्तनशीलता सेसर्वथा अपरिचित रहते थे और इस कारण अधिकांश सुविधाओं से भी वंचित रहते थे। देश स्वाधीन होने के पश्चात स्वभावतः ग्रामों की समस्याओं की ओर भी नेताओ का ध्यान गया और उनके सर्वांगीन विकास पर बलदिया गया। इन नेताओं ने स्वतंत्रता के लिए होने वाले संघर्ष के समय देश के ग्रामाँचलों मे जागृति-संदेश देते समय उसकी समस्याओं के विविध पक्षों का अध्ययन किया था आजादी के बाद ग्रामाँचलों को अपने उपन्यासों का विषय बनाया और मात्र अपने दो उपन्यासें द्वारा ग्राम-जीवन की सम्पूर्ण कथा को हमारे सामने रख दिया। वे मैथिलीशरण गुप्त की तरह केवल

Late Ramesh Warpudkar College, Sonpeth, Dist. Parbhani

ग्रामजीवन की सुषमा पर मुग्ध नहीं होते बल्कि उससे कहीं आगे बढ़कर वहाँ की तड़पती अनेकानेक समस्याओं से घिरी जिन्दगी और दो जुन रोटी की चिन्ता को भी उजागर करते है। धार्मिक आस्था लोक संस्कृति का मूलाधार है। जिसका ग्रामीण सामाजिक जीवन परगहरा प्रभाव दिखाई देता है। ग्रामीण जीवन का कोई भी अंग धार्मिकता से अछुता नही है। उनका परिवारिक, सामाजिक और आर्थिक जीवन उनकी धार्मिक आस्था से परिचालित होता है। सांस्कृतिक पर्व में अनेक सांस्कृतिक प्रथाए प्रचलित है। उनमें मेलों-त्यौहारों को मनाने की प्रथा सबसे प्रमुख दिखाई देती है। लोक कथाओं में लोक मानस में ही जीवित, ग्रामीण जीवन में प्रचलित लोक कथाओं का हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में विस्तार के साथ वर्णन दुआ है। रेणु प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन के सबसे प्रमुख कथा का रहे। इनकी प्रमुखता का सबडे बडा यह कारण है। की इन्होंने ग्रामीण जीवन को अपने कथाओं का आधार बनाया है। इनके कथाओं के पात्र निम्नवर्गीय हरिजन, किसान, लोहार, चर्मकार आदि रहे हैं। इन्होंने पात्रों की जीवन-कथा की रचना की है। रेणुने सताये हुए शोषित पात्रों की सांस्कृतिक संपन्नता, मन की कोमलता और रागात्मकता तथा कलाकारोचित प्रतिभा का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। रेणु और प्रेमचंद दोनों में पात्रों को लेकर साम्य है। 'साधारण' मनुष्य का पूरा चित्र अनकी कहानियों में देखने मिलता है। रेणु जनता की समस्याओं के प्रति ध्यान नही ऐसे बात नहीं। वे कहते है– "मैंने जमीन, भूमिहीनों और खेतिहर मजदूरों की समस्याओं को लेकर बाते कीं। जातिवाद, भाई-भतीजावाद और भ्रष्टाचार की पनयती हुई बेल की और मात्र इशारा नहीं किया था, इसे समूल नष्ट करने की आवश्यकता पर भी बल दिया था"।

परती परिकथा में रेणु ग्रामजीवन में गहरे पैठे है, तथा उनकी प्रीति धरती के प्रति औरप्रगाढ हुई है। ग्रामीण - जीवन की छोटी-बडी सच्चाईयाँ धरती की छूअन से बनी प्रतीत होती है। 'रेणु' ने गाँव को बडी निकटता से देखा ही नही, भोगा भी है। अतः स्वतंत्र्योत्तर ग्राम-जीवन आर्थिक विपन्नताएँ रोजी - रोटी के अनुतरित प्रश्न सरकारी तथ्य की स्वार्थी, मनोवृत्ति टूटते-बनते नये नाते रिश्तों की दुनिया, छटपटाते मूल्य-बोध का गहरा अहसास इस धरती की कृति से होता है। 'परती परिकथा' के केन्द्र में परानपुर गाँव है। प्रारम्भ का चित्र है "बहुत उन्नत गाँव है परानपुर सात-आठ हजार की आबादी है। प्रत्येक राजनीतिक पार्टी की शाखा है यहाँ। धार्मिक संस्थाओं के कई धुरन्धर धर्म/वजी इस गाँव में विराजते हैं। पंडित नेहरु तीन बार पदार्पण कर चुके है इस गाँव में। लाहौर

Sonpeth Lale Ramesh ... College, Dist. Parbhani

कांग्रेस के बाद पहली बार, दूसरी बार 1936 में चुनाव के दौरे पर और पिछले साल कौसी प्रोजेक्ट देखने आए थे तब। "परानपुर गाँव की सबसे बडी समस्या भूमि की समस्या है। यह उपन्यास धुल-धुसरित वीरान धरती पर अधिकार के विभिन्न दावों-उपदावों की कथा है, परानपुर के नव-निर्माण की कथा है। भूमि सम्बधी उन सरकारी सुधारों की, जिन्होंनेअपने प्रभावों की परिणति से गाँव को विभिन्न इकाइयों में बाँटकर रखा है। जमींदार और किसान ही एकधरती पर परस्पर विभिन्न दावेदार नही, एक परिवार के ही विभिन्न दावेदार है।

उपन्यास में राजनीति के नाम पर भुदानियों की असफलता का भी थोडा चित्रण है जो भूदानियों की स्वार्थ नितियों को स्पष्ट करता है। भूदान करने में भी किसानों का निजी स्वार्थ कांग्रेसी तथा समाजवादी नेताओं को प्रसन्न करने का है। क्योंकि सर्वे के समय अनुचित रुप से दूसरों की भुमिपर दावा करअधिकार करने में वे सफल हो सके। भाई-भाई तक एक दूसरे का भाग हडपने के फेर में है गुरुध्वज 'झा' नेवकील बनकर इसका खूब लाभ उठाया। लुत्तों ने भी भुदानी कार्यकर्ताओं के लिए तीन सौ एकड भूमि का दानपत्र बटोरा, परंतु इसमें अपना कमीशन न मिलने पर जनता को कार्यकर्ताओं के खिलाफ संगठित करने में सफलता प्राप्त की। स्वतंत्र्तापूर्व का ग्रामीण समाज अंग्रेजों के आगमन पूर्व की सामन्तवादी व्यवस्था और उनकेआगमन के साथ आई पूँजीवादी व्यवस्था को दो पाटों के बीच पिसता रहा। पहली संस्कृति के रुप में अवशिष्ट थी और दूसरी सभ्यता बनक़र आई तथा इसके आगमन के साथ ही ग्राम जीवन की व्यवस्थित शाखा विशृंखलित हो गई। 1920 में जब गांधीजी का नारा गाँव-गाँव में धुम रहा था, तब कांग्रेसकर्मी नयी जागृति के अग्रदूत बन गये थे। समाज सुधार को लेकर और ग्राम सुधार को लेकर चर्चाए होने लगी थी।

नयी साम्यवादी और समाजवादी की हवा चलने लगी थी। परन्तु अपनी पुरानी मान्यताओं और परम्पराओं में जकडे गाँव पिछडे ही रहे। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात देश में सामाजिक रीतियों, अभिवृतियों व मूल्यों में विशमढंग से परिवर्तन हुए जबकि सामाजिक जीवन का हर पक्ष इस संक्रमण में फसा हुआ था। स्वतंत्रता पूर्व भारतीय आशावादी था। आजाद भारत की सुखद कल्पना से समस्त जनता को एक सूत्र में बांध रखा था। भारतीय जनता ने बहुत अधिक उम्मीदे बना रखी थी, किन्तु आजादी के पश्चात वह साकार होते नही दिखाई दिये। रेणु के साहित्य पर राजनीति की हावी नही है, तो भी उनका समाजवादी चिंतन छिपा नही। स्वयंसमाजवादी होते हुए भी उन्होंने 'मैला आँचल' के

बावनदास कांग्रेसी एवं 'आत्मसाक्षी' कहानी के साम्यवादीगनसत के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। "समाजवाद के बिना स्वतंत्रता असार्थक है यह वे मानते थे। इसी कारण मेरीगंज के स्वराज्योत्सव में औराही हिंगना का एक समाजवादी कार्यकर्ता नारा भी लगाता है। कि यह आजादी झुठी है"।

रेणु की दृष्टि में मेरीगंज गाँव की बीमार सामाजिक स्थिति के दो कारण है - बेकारी और गरीबी। जिनके कारण सम्पूर्ण गाँव विभिन्न जड़ताओं और अभावों का भयानक शिकार है। अन्न-वस्त्र जैसी मौलिक आवश्यकताओं की भी पूर्ति नहीं हो पाती है। वर्ग-वैशम्य अपने उग्ररुप में विद्यमान है। मुटठी भर अन्न ओर तन की लाज मात्र ढकने के लिए वस्त्र जुटा सकने में असमर्थ व्यक्ति तिल-तिल भर रहे है। जमींदार खटमलों की तरह सर्वहारा वर्ग को चुसते है। जड़ता ऐसी कि विवश और छटपटाती जिन्दगी जीकर भी वे उफ तक नहीं करते। डॉक्टर प्रशान्त हतप्रभ है कि किस कठोर नियंता ने इन हजारों क्षुधितों को अनुशासित कर रखा है। कफ से जिनके दोनों फेफड़े जकड़े हुए है और जिन्हे ओढ़ने को वस्त्र नहीं और सोने के लिए चटाई तक उपलब्ध नही हैं। मेरीगंज में सामाजिक स्थिति में असमानता के तत्व उभरते हुए दिखाई पडते हैं। गाँव में बारहों वर्णो के लोग हैं। यहाँ एक भी मुसलमान नहीं है।

देश-विभाजन के समय लोग सोचते है "बड़े भाग से मेरीगंज बच गया। दस मुसलमान भी होते तो पाकिस्तान लेकर ही छोड़ता। "छोटे मोटे धंदे करने वाले मुसलमान बीच-बीच में मेरीगंज आते रहते। आजादी प्राप्ति के समय हिन्दू मुस्लिम दंगों के समय ऐसे ही एक गरीब मुसलमान जुमराती से सुमिरनदास ने पांच रुपये छीन लिए। बालदेव हिंदू और मुसलमान के साम्प्रदायिक दंगो से अवश्य विचलित थे। उसे लगता है कि अंधेरा हो गया। एक दम सब पगला गये। उसे कीर्तन की पंक्तियाँ याद हो जाती है।

"अरे चमके मन्दिरवा में चाँद
मसजिदवा में बंसी बाजे"

इसी प्रकार जीवन के विभिन्न आयामों को 'मैला आँचल' स्पष्ट करता है। तो परती-परिकथा की कथा का आधार भी परानपुर गाँव, जो प्रतीक बनकर आया है। यह काल्पनिक सम्भावना पर आधारित है। स्वतंत्रता के पश्चात के संक्रमण कालीन भारतीयों का प्रतिनिधित्व करता है।

Lale Ramesh Warpudkar ACS College, Sonpeth Dist. Parbhani

संदर्भ

1. भारत यायावार - रेणु रचनावली
2. मैला आँचल - फणीश्वर नाथ रेणु
3. भारत यायावार - रेणु रचनावली
4. हिन्दी उपन्यास - लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय
5. मैला आँचल - फणीश्वरनाथ रेणु
6. परती-परिकथा - फणीश्वरनाथ रेणु
7. स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास - डॉ. कांति वर्मा
8. जुलूस- रेणु
9. हिन्दी उपन्यास : एक सर्वेक्षण - श्री महेन्द्र चतुर्वेदी

Late Ramesh Warpudkar (ACS) College, Sonpeth Dist. Parbhani

PRINCIPAL
Late Ramesh Warpudkar (ACS)
College, Sonpeth Dist. Parbhani

डॉ. सतीश यादव

जन्म 9 अक्टूबर 1973। एम.ए. हिंदी पीएच.डी., 1995 से शिवाजी महाविद्यालय, रेनापुर जि. लातूर (महाराष्ट्र) में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत। सन् 2022 तक 18 पुस्तकें प्रकाशित। आलोचना तथा संपादन लेखन का प्रमुख कार्यक्षेत्र। हिंदी और मराठी की पत्र-पत्रिकाओं में लेखन।

पुस्तकें (हिंदी) : हिंदी के कालजयी उपन्यास, आधुनिक विमर्शः विविध आयाम, आलोचना का स्वराज, अज्ञेय और मर्ढेकर का रचना कर्म तथा आलोचना का आलोक।

पुस्तकें (हिंदी संपादन) : 'पथिक' कविवर हरिवंशराय बच्चन, निबंध सौरभ, साहित्य भारती, अर्वाचीन हिंदी काव्य, गद्यकार अज्ञेय तथा उनकी रचना धर्मिता (खंड 2), कवियों के कवि अज्ञेय (खंड 1), गजानन माधव मुक्तिबोधः सृजन और संदर्भ, हाशिए का समाज और हिंदी-मराठी साहित्य, लोकधर्मी लोकचिंतक : डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, फणीश्वरनाथ रेणु : संदर्भ और प्रकृति, गीत गाएँ विज्ञान के, खोज एहसासों की (अनुवाद संपादन)।

संपादन (मराठी) : समीक्षेचा अनुबंध

प्रकाशनाधीन : 'अंतरीचा डोह'(मराठी वैचारिक लेख संग्रह)

पुरस्कार : 'गुरु गौरव पुरस्कार', 'राष्ट्रभक्त स्वामी विवेकानंद पुरस्कार', स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड का 'उत्कृष्ट शिक्षक पुरस्कार', महाराष्ट्र राज्य हिंदी साहित्य अकादेमी, मुंबई का 'आलोचना का स्वराज' ग्रंथ हेतु 'आचार्य नंददुलारे वाजपेयी समीक्षा पुरस्कार', स्मृतिशेष एड. देविदासराव जमदाडे प्रबोधन विचारमंच, लातूर का राज्य-स्तरीय 'कार्यनिष्ठ शिक्षक पुरस्कार', डॉ. देवीसिंह चौहान साहित्यिक पुरस्कार (जि.प., लातूर)।

संपर्क : मुक्तिपर्व, शारदा नगर, अंबाजोगाई रोड, लातूर (महाराष्ट्र) 413 531, 94032 49804

यश
यश पब्लिकेशंस, दिल्ली
1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा दिल्ली-32

ISBN 978-93-85647-03-1
9 789385 647031
www.yashpublications.co.in